International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 102-104

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 102-104
www.allresearchjournal.com
Received: 17-09-2015
Accepted: 18-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्याालय ढलियारा कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्याालय ढलियारा कांगडा हिप्र

मैला आंचल में आंचलिकता

डॉ. शिवदत्त शर्मा

उपन्यास सामाजिक दर्शन का दिग्दर्शन होता है। उपन्यास के विभिन्न प्रकारों में से एक आंचलिक उपन्यास भारतीय ग्रामीण परिवेश का सच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करता है। आंचलिक रहन–सहन से एक स्थान पर बैठ कर ही परिचय प्राप्त कराने की क्षमता आंचलिक उपन्यास में होती है।शहरी अथवा नगरीय जीवन से नितान्त भिन्न आंचलिक जीवन का अनुभव केवल आंचलिक उवन्यास ही करवा सकता हे। ग्रामीण जीवन दर्शन एवं संस्कृति का पवित्र ग्रन्थ आंचलिक उपन्यास होता है। [1]

यह उपन्यास भी आंचलिक पृष्ठभूमि में ही लिखा गया है। इस उपन्यास का केन्द्र बिन्दु मेरीगंज है जो बाहरी दुनिया से एक तरह से कटा हुआ है तथा हर प्रकार से पिछडा हुआ है। यही कारण है कि सन् 1942 के आन्दोलन के समाचार यहां अफवाहों के रूप में ही पहुंचते हैं। गांव के लोग असलीयत से बे,खबर होने के कारण प्रायः अवास्तविकता का शिकार हो जाते हैं। सम्पूर्ण गांव जातियों में बंटा हुआ है। जातिगत विभाजन यहां के समाज की उल्लेखनीय प्रकृति हैं पूरा गांव शिक्षा एवं चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। शैक्षिक एवं मानसिक दृष्टि से यहां के लोग बुरी तरह पिछडे हुए हैं। अन्ध विश्वास और अन्धपरम्पराओं में बुरी तरह गांव जकडा हुआ है। यही कारण है कि यहां विकास नाम की कोई चीज दिखाई नहीं देती। पुराने रीति रिवाज, उत्सव, पर्व, एवं लोकसंगीत इस ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग हैं। इस उपन्यास मे इन पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाशं उपन्यासकार द्वारा डाला गया हैं। उपन्यासकार इसी तथ्य को उजागर करते हेए लिखते हैं– इसमें फूल भी हैं, शूल भी हैं। धूल भी है गुलाब भी है। कीचड भी है चंदन भी, सुन्दरता भी है कुरुपता भी। मैं किसी से दामन बचा कर निकल नहीं पाया। [2]

टोलों में बंटा ग्रामीण–परिवेश

इस उपन्यास में कहानी का संकेत देते हुए बताया गया है कि गांव में एक कबीर पंथी मठ है जो वस्तुतःहर तरह के व्यभिचार का केन्द्र है तथा महन्त सेवादार अन्धा होने के वावजूद बुरी तरह व्यभिचार में संलिप्त है। उसके निधन के बाद रामदास को गद्दी पर बैठाया जाता है, जबकि गद्दी दिलवाने आया लरसिहदास मठ की सम्पत्ति को देख कर स्वयं ही गद्दी पर बैठने और महन्त बनने की इच्छा करने लगता हैं। यह उपन्यास इस बात का दस्तावेज है कि किस प्रकार मठों में व्यभिचार व्याप्त है और जीवन के नैतिक मूल्य संकट में हैं।

इस उपन्यास में सूचित किया गया है कि इस गांव में मेरीगंज में तीन टोले हैं, मालिक, राजपूत, तथा यादव टोला। ब्राह्मण संख्या में कम अवश्य हैं परन्तु तीसरी शक्ति के रूप मे उनकी गिनती की जाती हैं। गांव में वैसे तो बारह वर्ण हैं परन्तु प्रभुत्व केवल दो ही वर्णों का है राजपूत और कायस्थ। सम्पत्ति एवं सत्ता के लिए परम्परागत मनमुटाव इनमें व्याप्त है। यादव स्वयं को यदुवंशी क्षत्रिय मानते हैं परन्तु राजपूत उन्हें क्षत्रिय नहीं मानते।

उपन्यास का केन्द्र बिहार है तथा बिहार राज्य के पिछडे गांव का प्रतिनिधित्व करता है तथा सम्पूर्ण बिहार का जातिगत समीकरण पाठकों के समक्ष उभर कर सामने आता हैं। राजपूत और कायस्थ अपने को उच्च जाति का मानते हैं परन्तु इनकी श्रेष्ठता का आधार राजनैतिक और आर्थिक सत्ता हैं। बिहार में गुअर टोली छोटी जाति की सूचक है परन्तु यादवों को गुअर टोली कहने का किसी में दम नहीं है। गांव में अन्य बहुत सी निम्न–जातियां हैं उनको केवल टोली ही कहा जाता है तथा अपने आप को ये जातियां क्षत्रिय कहती हैं। पोलिया, तत्मा, यदुवंशी, गहलौत छत्री कुर्मछत्री, धनुकधारी छत्री टोली कुशवाहाछत्री टोली तथा रैदास छत्री टोली आदि सभी निम्न जातियों से सम्बन्धित है ंफिर भी अपने नाम के साथ क्षत्रिय शब्द लगा कर उच्च जातियों में स्थान पाना चाहतीं हैं।, ये जातियां उपेक्षित हैं फिर भी आपस में सामाजिक व्यवहार नहीं रख पातीं। इस तरह उपन्यासकार रेणु ने बिहार का जो जातिगत चित्र प्रस्तुत किया है वह यथार्थ है।

गांव में मालिक टोला, राजपूतटोला, और कुछ सीमा तक यादव टोला प्रभुत्व शाली वर्ग हैं। इस वर्ग के लोग तो सम्पन्न है। आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न हैं। मालिक बेला के विश्वनाथ प्रसाद कायस्थ के पास एक हजार बीघे जमीन है। ठाकुर रामकृपाल सिंह के पास लगभग 359 बीघे जमीन है, और खिलावन सिंह यादव के पास, भी 150 बीघे जमीन है। शेष लोग अभावग्रस्त, साधनहीन, और मजदूर हैं। इनका जीवन इन जमीदारों के यहां मेहनत–मजदूरी करके चलता है।गांव में एक तीसरा वर्ग भी है–आदिवासी संथाल। गांव के प्रभावशाली लोगों ने इनका शोषण कर के इनकी एक मात्र सम्पत्ति जमीन छीन ली है। परस्पर वर्ग संघर्ष में प्रायः आदि वासियों पर ही निरन्तर अत्याचार होते रहते हैं।

2 ग्रामीण परिवेश में व्याप्त अवैध यौन सम्बन्ध

इस उपन्यास में ग्रामीण परिवेश में व्याप्त बुराइयों का यथार्थ चित्रण बिना पक्षपात के किया गया है। हरिजन वर्ग में व्याप्त अन्धविश्वास, गन्दगी, चरित्रहीनता, आदि प्रत्येक बुराई का यथार्थ चित्रण किया गया है। चिचाय की मां, रमजू की मां, फुलिया, फुलिया की मां, और रमपियरिया आदि सभी नारी पात्र नैतिक पतन और जहालत के जीते–जागते उदाहरण हैं।

ग्रामीण परिवेश में किस प्रकार बुराईयां व्याप्त होतीं हैं उसका उदृघाटन यह उपन्यास करता है। चिचाय की मां का धंधा अवैध गर्भपात करवाना बन गया है और बेरोकटोक वह इस धंधे में संलिप्त है। दूसरी ओर पार्वती की मां का सम्पूर्ण परिवार पति, देवरानी, देवर, बेटाबेटी किसी न किसी अज्ञात भयानक रोग के शिकार हो कर असामयिक मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। बजाए इस के कि पार्वती की मां से सहानुभूति की जाए, गांव के लोग उसे डाइन कहने लगते हैं। एक उदाहरण देखिए–

डाइन है। तीन कुल में एक को भी नहीं छोडा। सब को खा गई। पहले भतार को, उसके बाद देवदेवरानी, बेटाबेटी को खा गई। अबएक नाती है उसको भी खा रही है। [3]

उपरोक्त पंक्तियां ग्राम्य जीवन में व्याप्त अन्धविश्वास को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। किस प्रकार ग्रामीण जीवन में अशिक्षा और अन्धविश्वास ने सामाजिक वातावरण को जकड रखा है यह इसका जीता जागता उदाहरण है। अनेक बुराइयां समाज में हैं जिनके प्रतिकार का कोई रास्ता उनके पास नहीं है। रमजू की मां चरित्रहीन औरत हैं जवानी में वह रामकिरपाल सिंघ की रखैल थी। और बुढापे में गांव की युवतियों को चरित्रहीन बना रही हैं। यही हाल फुलिया की मां का है वह भी चरित्र हीन एवं झगडालू औरत हैं। उसकी बेटियां भी उसी के पदचिन्हों पर चल रहीं है।अनेक पुरुषों के साथ उनके अवैध सम्बन्ध हैं। उसकी कमाई का यही एक मात्र धन्धा हैं फुलिया मुक्त काम सम्बन्धों में विश्वास रखती है तथा किसी प्रकार के नैतिक बन्धन उसे स्वीकार्य नहीं हैं। समाज के अन्दर अनैतिक वातावरण का बोलबाला है। फुलिया की मां अवैध धन्धे की कमाई से लाल साडी पहनती है और इसमें उसे जरा भी अनैतिक नहीं लगता। फुलिया के सहदेव के साथ अवैध सम्बन्ध हैं परन्तु वह शादी खलासी के साथ कराना चाहती है। फुलिया की बहन भी अपनी बहन का अनुसरण करती है।इस तरह मैला आंचल में अनैतिकता, अवैध सम्बन्ध, एवं अन्धविश्वास का बोलबाला है तथा हर तरह की सीमा का अतिक्रमण इस ग्रामीण परिवेश में देखने को मिलता है। [4]

डॉ सतीशकुमार ने इसका विश्लेषण करते हुए ठीक लिखा है कि–समाज में उंची जाति के लोग निम्न वर्गीय स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध रखने में कुछ भी अनैतिक नहीं समझते तथा उनकी स्त्रियां भी पुरुषों की कमजोरी का लाभ उठा कर अपने अवैध सम्बन्ध डाक्टर जैसे पर पुरुषों से जोडने में हिचकचातीं नहीं हैं। बालदेवऔर लक्ष्मी, कालीचरन और मंगला भी जीवन में अनैतिकता अपनाने में गुरेज नहीं करते। ऐंसा लगता है कि मेरीगंज गांव अवैध धन्धों का अड्डा बन गया है। यहां के लोग पेट की भूख की ही तरह यौन की भूख की तृप्ति करते हैं और उसके लिए किसी भी सीमा तक जाने में उन्हें कुछ भी अनैतिक नहीं लगता। आपस में जब लडते हैं तो एक दूसरे की पोल खोलने में उन्हें गौरव का अनुभव होता है। लडाई समाप्त होते ही फिर पूर्ववत हंसते गाते हैं और उत्सव मनाते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि उनके सम्बन्ध परस्पर मधुर नहीं हैं बल्कि कटुता एवं अवसादपूर्ण हैं। आपस में फूट के कारण शोषक पूंजीपति वर्ग इन शोषितों को निगलने के लिए तत्पर है। विश्वनाथ प्रसाद सिंह तहसीलदार ने कानूनी दांवपेच का सहारा लेकर सभी गांव वालों की जमीन हथिया ली है। कुल मिला कर नैतिकता का नाम तक गांव में किसी व्यक्ति की जवान पर नहीं दिखाई देता। छोटे से लेकर बडे तक सभी अनैतिकता में जी रहे हैं तथा सारा ग्रामीण परिवेश अनैतिकता के वातावरण में जी रहां है। तहसीलदार से लेकर मास्टर तक सभी अनैतिक यौन संम्बन्धों में आकण्ठ डूबे है नैतिकता के कहीं दर्शन नहीं होते। [5]

सामाजिक बुराईयों एवं कुरीतियों का उल्लेख

मैला आंचल न केवल आंचलिक सामाजिक रहनसहन का चित्रण करता है बल्कि सांस्कृतिक तात्कालीन परिवेश का यथार्थ भी चित्रित करता है। [6] त्यौहारों तथा अनेक अन्य अवसरों पर गांव के जीवन का रंग विरंगा चित्रण प्रस्तुत करके रेणु जी ने ग्रामीण सांस्कृतिक चित्रण को भी प्रभाव शाली ढंग से प्रस्तुत किया है। आंचलिक स्तर पर गांव में व्याप्त अनेक बुराईयों का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

इस सन्दर्भ में सबसे पहले कबीर मठ का उल्लेख इस उपन्यास में है। गांव में किस प्रकार महन्त जिनसे उच्च सामाजिक जीवन की अपेक्षा की जाती है वे भी लक्ष्मी जैसी किशोरी का शारीरिक शोषण करते हैं जिसे डेरे के महन्त सेवादास पढाने के लिए लाया था। सम्पत्ति के लिए परस्पर झगडा, शारीरिक शोषण, शोषित लक्ष्मी के कारण झगडा और मुकद्दमे वाजी होती है। सबसे बडी बिडम्बना यह है कि कानून भी लक्ष्मी को महन्त सेवादास के हवाले कर देता है। महंत का चेला रामदास जो पहले भैंसे चराने और खंजडी बजाने का काम करता था, अब मठ का महंत बनने के लिए उतावला है। 900 बीघे जमीन और लक्ष्मी का आकर्षण उसे महंत बनने के लिए लालायित कर देता है। आचरज गुरु लरसिंघदास को रामदास को गद्दी दिलवाने के लिए भेजते हैं परन्तु वह खुद बहां आने के बाद महंती का दावेदार बन जाता है। साधुओं की गन्दी भाषा एवं बुरा आचरण पाठकों को वितृष्णा से भर देता है। अनेक चालें चलने के बावजूद लरसिंघदेव महन्त नही बन पाता।

लरसिंघ देव को तो भगा दिया जाता है परन्तु रामदास गद्दी पर बैठ जाता है तथा संकल्प के बावजूद वह खुद व्यभिचार में फंस जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से आंचलिक परिवेश में मठों और धर्म–स्थलों के यथार्थ का पर्दाफाश किया है।

जातिय एव साम्प्रदायिक झगडे

इस उपन्यास में बडे ही सुन्दर ढंग से आंचलिक यथार्थ प्रस्तुत किया गया है कि किस प्रकार आंचलिक परिवेश में मेरीगंज जैसे ग्रामीण पिछडे क्षेत्रों में अशिक्षा के परिणामस्वरूप लोकजीवन में अवैध यौन शोषण तथा हर तरह की अनैतिकता का बोलबाला है। मठों, धार्मिकस्थलों जैसे पवित्र स्थलों पर अवैध यौन शोषण प्रायः आम बात है। जातिपाति मे बंटा हुआ मेरीगंज छुआछूत जैसी कुरीतियों में बुरी तरह से जकडा हुआ है। ब्राह्मण श्रेष्ठ कहलाते हैं तथा बे संगठन में बैठ कर एकसाथ खाना नहीं खा सकते। जातिगत संकीर्णताओं एवं परस्पर आपसी झगडों से मेरीगंज बुरी तरह प्रभावित है। गांव वालों के परस्पर खट्टे सम्बन्धों और परस्पर सौहार्द्र के अभाव में गांव की दुर्दशा पर व्यंग्य करते हुए लक्ष्मी का व्यंग्य देखिए–

गांव के ग्रह अच्छे नहीं है। जहां छोटी–मोटी बातों को ले कर, जहां आपस में इस प्रकार झगडे होते हैं। जहां आपस में मेलमिलाप नहीं है। वहां जो कुछ न हो वह थोडा है। [7]

जोतखी काका के भी उद्‌गार इसी तथ्य को प्रकट करते हैं–

कोई माने या न माने हम कहते है कि एक दिन इस गांव में गिद्ध कौआ उडेगा। गांव के लक्षण अच्छे नहीं हैं। गांव का ग्रह बिगडा हुआ है। किसी दिन इस गांव में खून होगा। पुलिस दरोगा गांव की गलीगली में घूमेगा। [8]

डॉ आर पी शर्मा ने इस पर टिप्पणी करते हुए ठीक ही लिखा है– विभिन्न जातियों के परस्पर वैमनस्य अन्धविश्वास, रूढियों, गरीबी, और झगडों ने यदि वहां के जीवन को भूल, धूल और कीचड भरा बना दिया है तो वहां के नैसर्गिक भोले पन, संस्कृति, लोकजीवन और लोकनृत्य उसे चन्दन की सुगन्ध प्रदान करते हैं।

परस्पर सम्बन्ध एवं सम्वाद

इस उपन्यास में गांव में परस्पर सम्बन्धों का उल्लेख यह दर्शाता है कि किस प्रकार कटुता के बीच बूढे और जवान रौंदी बूढे को माध्यम बनाकर परस्पर मस्करी और व्यंग्य से नीरस जीवन में मिठास घोलने का प्रयास करते हैं चाहे उनका परस्पर प्रेम नहीं है। गांव के लोगों की भिन्न प्रकृति को यहां स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार अपने को महत्व न मिलने के कारण हरगौरी बालदेव से डिस्पेंसरी खुलवाने से नाराज है। गांव के लोगों में शहरीचालाकी का अभाव है। गांव के लोगों के सीधेपन तथा उनकी सरलता अनपढता आदि के बारे में कहा जा सकता है कि उनमें अनपढता, अन्धविश्वास, और अज्ञानता है। [9]

सारांशतः कहा जा सकता है कि इस उपन्यास के माध्यम से गांव की आंचलिकता का नैसर्गिक चित्रण हुआ है तथा गांव के रहन सहन अच्छाइयों तथा बुंराइयों का चित्रण सुन्दर ढंग से हुआ है। एक तरह से ग्रामीण रहन सहन एवं प्रकृति को प्रकट करने वाला यह उपन्यास आंचलिकता का सन्दर्भ ग्रन्थ है।

सन्दर्भ सूचि

1. विद्याधर द्विवेदी हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ 76
2. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ 56
3. उपरोक्त मैला आंचल पृ 86
4. डॉ रेणू शाह फणीश्वर नाथ रेणू का कथा शिल्प पृ124
5. रामदरश मिश्रा हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ78
6. चण्डी प्रसाद हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय विवेचन पृ 137
7. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ 86
8. उपरोक्त मैला आंचल पृ 79
9. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष पृ 142